अलख

# विषय सूची


01. सम्पादकीय ....01

02. प्रवचन ब्रह्मलीन सदगुरूदेव स्वामी श्री अलखानंद जी महाराज..... ....02

03. ਗੱਲ ਰੌਲੇ ਲੋਕਾਂ ਪਾਈ ਏ ....06

04. ਕਲਿਆਣ ਦੇ ਵਚਨ ....08

05. नाभिकेन्द्र और हमारा स्वास्थ ....10

06. प्रभु का कार्य ....11

07. विचारणीय वचन ....12

08. Dhammapada ....14

09. पत्रिका का लक्ष्य ....15

10. ਪਤ੍ਰਿਕਾ ਦਾ ਟੀਚਾ ....16

11. सत्संग सूचनाएं ....16



अलख अमर विवेचन प्रत्यक्षालय
सिद्ध झण्डी, फगवाड़ा रोड, माहिलपुर ( होशियारपुर )
पिन-146105
website:-aavpashram.com
Email- aavpmahilpur@gmail.com


# सम्पादकीय

**ब्रह्मा विष्णु शिव अरू सब देवन को भेद।**
**कहैं कबीर श्री सदगुरू का नाहीं पावै भेद।।**

**प्रिय पाठक वृंद,**

ये अतुल्य वचन हैं कबीर साहिब के जिन्होंने इस बात को अनुभव किया कि सब को जांचा, नापा, तोला जा सकता है सिवा एक सदगुरू के। सदगुरू अनंत है, अद्वैत है, परब्रह्म हैं। सदगुरू को समझा भी इसीलिए नहीं जाता क्योंकि व्यक्ति हमेशा दोष दृष्टि प्रधान होकर ही जीता है। जब देखे तो दोष, जब देखे तो अवगुण।

**ओंठ हाथ को जोड़ कर लागै सदगुरू सेव।**
**रेख शिला सदगुरू वचन काट सके न देव।।**

अवगुण दृष्टा सेवा नहीं करेगा। सेवा होती है हाथ व होंठ जोड़कर। भाव श्री गुरू महाराज के सामने न व्यर्थ वाद करे, न व्यर्थ कर्म। वचन को ही पत्थर की लकीर जान कर सेवा में लगे।

**दीपक सदगुरू वचन है लेकर चले जो हाथ।**
**जगत अंधेरी कोठरी कबहूँ न भटके पाथ।।**

यदि वचन की छाया में है तो माया रूपी धूप कभी शिष्य को तपा नहीं सकती।

**लबों पे मोहर—ए—खामोशी,**
**दिल में रख यार की सूरत।**
**गरीबी देख न गालिब,**
**शहंशाह वो है दुनिया का।।**

अलख

# प्रवचन ब्रह्मलीन सद्गुरु देव स्वामी अलखानन्द जी महाराज



**''ब्रह्म राम ते नाम बड़ वरदायक वरदान''**

यानि ब्रह्म से यानि निराकार से बड़ा उधर साकार से बड़ा दोनों से बड़ा, था तो पुलिसमैन—थानेदार और पांच सेर इस के पास सोना है अब वो सब कुछ न्योछावर करवा लिया, और करवा कर बस कहीं गये एकांत में और वहां से पीछे फोक्स लाईट पड़ रही है-भगवान के दर्शन हो गये। जय हो—धन्य हो महाराज। पांच सेर सोना वहां से लेकर और जो कुछ नकदी थी लेकर वहां से दौड़े और पंजाब आ गये। आकर जुण्डली ने कह दो, सब बांटा पर शायद दूसरी मंडली को न दिया, थोड़ा बहुत दिया, खाया, खर्चा, ज़मीन खरीद, मकान खरीद, क्या से क्या किया। वो जुण्डली वालों ने जा कर उसी सेठ को कहा कि वो तो ऐसे ठगी थी पर वो तो हो चुकी। उधर ठगी हो चुकी, धन जा चुका।

मेरा भाई हम ऐसी कोई बात नहीं कह रहे हैं, धन बातों से छुटाने के लिए तो प्रयत्न कर रहे हैं। क्या तूने आज तक सुना, समझा कहां बैठा है ? कहां पड़ा है खोज, सोच बात को, कुछ न कुछ ठगियों में बह रहा है तो मेरा भाई जिसने जितना सुना था, तेरे को राम कहना सिखा दिया—बस कहा तो नीम कहने से कोई अर्थ सिद्ध न हुआ, जहर कहने से कहीं मर नहीं गए, मेरा भाई कथनी से कोई अर्थ सिद्ध न होगा। यह तो कहा है — सुमिरण नहीं:—

**'साचा सुमिरण घट बसे, दीना सृजनहार।'**

दीना सृजनहार— किसी की देन है जिसने सारी सष्टि रची। सबसे पहले ज्ञान किसने करवाया। उसे गुरूवाणी कार कह रहे हैं आदि गुरूवेनम:, गुरूवे नम: गुरूदेवाय नम: वो उसने क्या ज्ञान कराया था वह कहीं जागृत है। रामायण के सीरियल में तो यह देख गये थे कि सुखैण वैद्य को जब लाया गया था लक्षमण जी का इलाज करने के लिए, तो कहने लगा कि मैं तो शत्रु का वैद्य हूं, इन्कार करने लगा।

तब श्री राम ने कहा कि वैद्य तो वैद्य है शत्रु मित्र से क्या ताल्लुक और विभीषण जी कहते हैं कि देश भक्त और राज भक्त तो और भी बहुत हो सकते हैं पर वेद विद्या त्याग जायेगी, वेद मर्यादा आपको छोड़ जायेगी अगर आप के देखते देखते रोगी मर जाए। तो वेद विद्या कुछ होती है। वेद विद्या गुरू से प्राप्त हुई थी, औषधि उपचार के लिए थी। हे प्राणी! कहीं वो ज्ञान है जो सृजनहार ने दिया था, खोजो, सोचो, पूछो। गीता अ: 4/1 से 7 तक पढ़ना भगवान कह रहे हैं कि सृष्टि के आदिकाल में अविनाशी का योग राजा सूरज को करवाया था सूरज ने अपने पुत्र मनु को मनु ने इक्षवाकू को करवाया फिर यह राज ऋषियों में फैला, फिर यह लुप्त प्राय हो गया—वो योग क्या है ? जो भगवान कह रहे हैं अब मैं तुझे करवा रहा हूं। यह योग अति उत्तम है। रहस्य और धर्म का विषय है।

एक भगवें भेष में यहां से हमारे पीछे पीछे साधु चला, उधर चले गये खडड की तरफ। वार्तालाप होते होते यह तथ्य चला कि यह जो हमारी तुम्हारी काया है, यह पांच तत्वों की— आकाश, पृथ्वी, वायु, जल, अग्नि। इन पांच तत्वों की हमारी काया बनी है या भगवान विष्णु की वही पांच तत्व हैं। सभी की पांच तत्वों से बनी है, कोई अन्तर नही। कहता नहीं

जी यह कैसे हो सकता है। मैंने कहा विधानत: ऐसे हो सकता है—जरा तुम पीछे को लौटो। एक दिन दस वर्ष, इससे पहले भी थे, और दस वर्ष पीछे चले जाओ, ऐसे जाते जाते एक दिन पैदा हुए थे और पीछे चले जाओ मां के गर्भ में थे औऱ पीछे चले जाओ तो पिता के वीर्य और माता के रज रूप में थे और पीछे चले जाओ रस रूप में थे और पीछे चले जाओ रक्त रूप में थे और पीछे चले जाओ रक्त कहां से आया—अन्न, जल, फल, दूध माता ने खाया, पिता ने खाया। एक दिन उस रूप में थे। यह जो ऊपर कहलावे वहां पढ़ते बढ़ते एक ढ़ांचा इक्ट्ठा हुआ फिर जब यह बिखर जायेगा तो फिर नाश है। ज्यों का त्यों आग-आग में चली जाएगी, आंखे कैसे देखेंगी। जल जल में चला जायेगा, पानी—पानी में चला जाएगा, मिट्टी—मिट्टी में चली जायेगी, पांचो तत्व खाली पोल यानि आकाश—आकाश में मिल जाएगा। तो वह साधू कहता जी यह तो फिर आप ही जानें, हम तो एक बात जानते हैं कि मन कहीं नहीं रूकता यह उसके खुद के वचन है अब अगर पत्थर न डाल रखे होते गले में, चेले न बना रखे होते, चेले बना रखे हैं डूबने के लिए:—

**''जाका गुरू है आन्धरा, चेला निपट निरन्ध।**
**अन्धे अन्धा ठेलिया, दोऊ कूप पड़न्त।''**

अब यह वार्ता होने के बाद एक रास्ता रह जाता है कि विरोध करो और तो कोई चारा चलता नही। तो कहने जा रहे थे कि अन्धे डूबेंगे, डुबाऐंगे, तू भी अन्धों की बात में आ गया, मनुष्य का शरीर खो बैठा, बेकार कर डाला, यह प्रश्न ज्यों का त्यों बना रहने दिया कि राम क्या ? जो ऊपर देख रहा है यह तो है नहीं, बना बिगड़ेगा, टूटेगा, फूटेगा, घड़ा है, बनाया है, सोने चांदी का बना, तांबे का बना, मिट्टी पत्थर का बना, यह तो रहेगा नहीं। जो रहेगा उसको जाना नहीं। वो कहां है तेरे घट में। हम घट की बात कह रहे हैं। भट भेरे नहीं कि कभी कुछ कह गये तो कभी कुछ। वर्षों से कह रहे, बहुत वर्षों से। शायद यह लोग भी न मानते, यह लोग भी भटक जाते पर मेरे आदरणीय पूज्य दादी की जन्मभूमी है, उसका घर है यहां आज बैठ कर वचन कह रहे हैं। हे प्रेमी ! धोखा नहीं दे रहे, ठग नहीं रहे। एक बात एक ही कह रहे हैं, दो चार प्रकार की नहीं। तूने विचार न किया, कहां उलझ चुका है। कितना नीचे तक जा चुका है। तूने जाना नहीं कम से कम यही देख लेता कि नारा यहां लगता है **पहले जानो बाद में मानो**। पर भूल में रह गया। कोई ज्ञान कराए, कोई दिव्य नेत्र खोले दूर निकट यहां, वहां कहीं भी सुन्दर बात।

बहुत लोग आते हैं बेचारे नूरपूर से आए हैं एक पत्रिका जाती थी, रद्दी में से पत्रिका मिली पत्रिका लेकर जब पढ़ी विचार किया तो यहां पर आए। एक पत्रिका पर विचार किया कि इसमें ऐसे लिखा ठीक है, हमने कहा देखो, तुम अपने अन्दर देखो। पहले जानो बाद में मानो। तीन बातों का समन्वय है। ज्ञान, भक्ति और शुद्ध विवेक क्योंकि विवेक के बिना इस की कोई कीमत नहीं। मूर्ख के पास जाकर चीज़ की बेकदरी होती है और तीन चीज़ें साथ साथ होती हैं:—

ज्ञान, भक्ति और शुद्ध विवेक। भक्ति से तात्पर्य क्या ? भगवान में चित्त देना, भगवान कहां तेरे घट में। घट में पहले बाहर बाद, तेरे अन्दर पहले। भगवान में चित्त देना भक्ति हुई, देने वाला भक्त हुआ। यह तीनों बातें इकट्ठी होने पर मन रूकता है। भगवान का ज्ञान ही नहीं तो भक्ति कैसी ? खाली कह रहा है, जिव्हा कह रही है, इन्द्रियां मन कहीं और दौड़ रहे हैं। कह रहा है— **''सीया राम मय सब जग जानी''** पर जान सक ही नहीं रहा, अपने को नहीं जाना, तो दूसरों को कैसे जानेगा। तो फिर कहने जा रहे थे कि हे

प्राणी! तेरे घट की वस्तु है:—

**घट की वस्तु नज़र न आवे, दिया बाहर ढूंढे अन्धा**

घट की वस्तु तो दिखाई नहीं दे रही, दीपक लेकर ढूंढ रहा है अन्धा:—

**'' यह जग अन्धा मैं केहि-केहि समझाऊं,**
**एक दोऊ होए उन्हें समझाऊं**
**सभी भूलाने पेट का धन्धा ''**
**लग गई आग सकल जग जल्दा,**
**बिन गुरू ज्ञान भटकया बन्दा।**
**एक दोऊ होएं उन्हें समझाऊं,**
**सभी भूलाने पेट का धन्धा।**

तो फिर कहने जा रहे थे कि राम की पहचान, राम की परख न होगी बिना सदगुरू के। भीलनी ने पहचाना तो सिर पर गुरू मतंग ऋषि थे, और भी बहुत कम इने गिने लोगों ने पहचाना जिन के सिर पर गुरू थे। गुरू एक पर लाता, एक का ज्ञान कराता है। जब यह प्रसंग आता है अब उस समय श्री राम जी को जंगलों में राम नहीं कह रहे। हनुमान जी पूछ रहे हैं:-

**कोऊ तुम सांवल गौर सरीरा,**
**क्षत्रिय रूप फिरू वन वीरा**

तो क्या शास्त्र झूठा है ? नहीं। राम पद सेवक था जरा विचार करो। राम पद से उठा कैसे ? गुरू ने राम का ज्ञान करा रखा है जो रम रहा है, इस लिए सेवक था। सपने में भी कभी किसी और देवता के प्रति भरोसा नहीं था। एक प्रभु का सेवक था।

श्री राम जी आए, दर्शन दिये, खोजो ज़रा, नहीं तो कितनों ने जाना, समय तो गंवा दिया, कि कुछ कहे जा रटे जा। फिर कहने जा रहे थे:—

**राम राम सब कोई कहे, ठग ठाकुर और चोर।**
**तारे ध्रुव प्रह्लाद जिन सो तो नाम कोई और।।**
**राम राम सब कोई कहे, नाम न चिन्हें कोई।**
**नाम चिन्हें सदगुरू मिले नाम कहावे सोय।।''**

जिन को यह पता लग गया कि ब्रह्म और राम से बड़ा क्या ? उसे भीतर पकड़ गए। पकड़ कर उस का आनन्द ले रहे दिन रात:—

**''वाणी उचरे साध जन अमृत चल्ले झरने''**

अब आगे की यह गति है, सिखाकर नहीं होता, कभी देखोगे, खोजोगे। तो मेरा भाई फिर कहने जा रहे थे—

**अगुण सगुण विच नाम सुसाखी।**

कहते अगुण सगुण— सगुण यानि गुण सहित भगवान, अगुण यानि निराकार भगवान, दोनों से नाम सुन्दर, सुसाक्षी अर्थात चुस्त गवाह, नाम भेद करवाता है, नाम पता देता है कि साकार क्या ? नाम पता देता है कि निराकार क्या ? नाम के बिना जो कुछ कर रहा है उससे कुछ न हुआ, न होने का, फीका है, खाली है, होना क्या ? जीवन बदलेगा।

भक्ति आई तो जीवन बदलेगा, भगवान का खेमा गड़ गया हृदय में। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार झूठे पड़ गये जीवन बदला, अशान्ति दु:ख, क्लेश, चिन्ताएं हटी। अगर कोई चिन्ताए, अगर कोई काम, क्रोध, अहंकार आकर स्थान घेरता है तो भी जैसे ही नाम मणि को चूसा वो झट हटा, उस चीज़ का चारा नहीं चलता, अमृत पान किया, पर अमृत यह समझना, कुछ वटिया धोकर, तुलसी दल, पत्ते घोलकर अमृत हो गया, अमृत तेरे भीतर की चीज़ है। तो इस कारण से कहते हैं:—

**काम क्रोध नगर बहु भरिया मिल साधू खण्डल खंडा हे**

साधु संग मिले तो खण्ड़ न हो जाता है।

**कर डण्डोत अंजली पुन बडा ऐ।**

तो डण्डे की भांति कैसे हो जाए ? यह गुरू के बगैर भेद नहीं मिलता, बातों से कोई अर्थ सिद्ध नहीं होता कि कानों पर कपड़ा डाला 'ओम नम: शिवाय' कहे जा, उपहास, खेल से ज्यादा और कुछ नहीं। हे प्राणी!

गुरू धारण करना ऑपरेशन है। गुरू धारण करने का अर्थ है तेरा अपना आपा बदल जाना। अपने घर को अपने प्रिय प्रीतम का दिग्दर्शन कर जाना, प्रिय प्रीतम को पकड़ जाना, प्रिय प्रीतम के साथ इक मिक हो जाना। गुरू महाराज कराते हैं, और कराने के बाद कहते हैं कि अब अभ्यास करो। पहले तो रट्टे हैं, पांच नाम सात नाम कोई 12 नामों के रट्टे लगा लो, कुछ पढ़ा लो, कुछ कह लो, कुछ नहीं होगा। कुछ बजाकर, गाकर पेट भर लो, उस से ज्यादा अर्थ सिद्ध नहीं होना। शास्त्र की बात कह रहे हैं, सनातन कह रहे हैं पर तूं उलझ गया है, फिर कह रहे हैं कि इन बातों का विचार करना। शायद कब, किस समय बात समझ में आ जाए। एक छोटी सी मिसाल दूं फिर आज की बात खत्म करनी है।

कहते हैं कोई एक ब्राह्मण था। किसी वैद्य के पास गया। तो वैद्य ने दवाई दी कहा कि ऐसे ऐसे दवाई खाना और खिचड़ी खाना। कहता क्या खाना? खिचड़ी। ब्राह्मण ने कहा हां तो कहता एक बार फिर बता दो कि क्या खाना? खिचड़ी। वह रास्ते में रटता-रटता चला गया—खिचड़ी-खिचड़ी। कहीं प्यास वगैरा जगी, पानी पिया और बाद में भूल गया कि क्या कहना?

क्या रट रहा था ज्यादा सीधा था तो कहा कि 'खा-चिड़ी' खा-चिड़ी। आगे गया तो कहीं कोई शिकारी जाल बिछाए बैठा है चिड़ियों को पकड़ने हेतु, और आज कोई भी चिड़िया जाल में न फंसी, और यह कहता जा रहा है 'खा-चिड़ी, खा-चिड़ी' तो उस शिकारी ने गुस्से में लगा दिये दो तीन थप्पड़ कहता मूर्ख जब फंसी नहीं तो खाएगा कैसे। वह कहने लगा कि क्या कहूं। कहता—'आए जाओ, फंसे जाओ' 'आये जाओ, फंसे जाओ' फिर बेचारा यह कहने लग गया। तब जरा और आगे कहीं गया तो कहीं चोर बैठे आपस में माल बांट रहे थे। यह कहे जा रहा है कि 'आए जाओ फंसे जाओ'। चोर उठे उठ कर दो-दो थप्पड़ लगाए। कहते ऐसा क्यों कहता है? तो कहता जी क्या कहूं? कहते कि कहो 'लाए जाओ, धरे जाओ' 'लाये जाओ, धरे जाओ' वह अब यह कहने लग गया।

आगे कहीं गया तो कहीं मुर्दे की अर्धकपाली करने को यानि आधे रास्ते में कूज़ा तोड़ना था, लोग रो रहे हैं और यह कह रहा है 'लाये जाओ, धरे जाओ' एक आदमी को गुस्सा आया तो उसने भी दो चार थप्पड़ और लगा दिये। कहता कि एक के मरने का इतना दु:ख और तूं कहता है कि 'लाए जाओ, धरे जाओ' क्यों ऐसी बकवास करता है। कहता क्या कहूं? कह—ऐसा दिन कभी न आए। 'ऐसा दिन कभी न आये' आगे कहीं गया तो कहीं राजा के यहां पुत्र हुआ था, सूबेदार उस पुत्र की खुशी मना रहा है। सिपाही ने बाहर सुना तो कहता-क्या बकवास कर रहा है? मार मार के खिचड़ी कर दूंगा। फिर मत ऐसा कहना। वो कहता खिचड़ी-खिचड़ी-खिचड़ी।

तो हे प्राणी! फिर कहने जा रहा हूं कि दया करके सदगुरू सत्त से मिलाता है, अपने घर लौटाता है। सद्गुरू ऑप्रेशन करता है, मन्त्र रटा दिया, गुरू धारण नहीं हो गया—निगुरा है-निगुरा है। लौटना है अपने आपे को जानना है, उस सद वस्तु को जानना है उसमें बिरती लगानी है। पापों का पलड़ा हटाकर सदमार्ग खोलना है इस का नाम गुरू धारण करना है। बातों का नाम नहीं है। ऐसे गुरू हज़ार बना ले, अर्थ सिद्ध न होगा ऐसे गुरू जोर ज्यादा देते हैं कि—पतिव्रता का पति एक होता है और ऐसे ही गुरू भी एक होता है। मिला भी गुरू, गुरू की मिसाल शास्त्र सूरज की देते हैं:—

**शेष पृष्ठ 7 पर देखें....**

# ਗੱਲ ਰੌਲੇ ਲੋਕਾਂ ਪਾਈ ਏ

**ਗੱਲ ਰੌਲੇ ਲੋਕਾਂ ਪਾਈ ਏਂ। ਗੱਲ ਰੌਲੇ ਲੋਕਾਂ ਪਾਈ ਏਂ।**

01. ਸੱਚ ਆਖ ਸੁਣਾ ਕਿਉਂ ਡਰਨਾ ਏਂ, ਇਸ ਸੱਚ ਪਿਛੇ ਤੂੰ ਤਰਨਾ ਏਂ।
ਸੱਚ ਸਦਾ ਆਬਾਦੀ ਕਰਨਾ ਏਂ, ਸੱਚ ਵਸਤ ਅਚੰਭਾ ਆਈ ਏ ॥
ਗੱਲ ਰੌਲੇ ਲੋਕਾਂ ਪਾਈ ਏ.....

02. ਬਾਹਮਣ ਆ ਜਜ਼ਮਾਨ ਡਰਾਏ, ਪਿਤਰ ਪੀੜ ਦਸ ਭਰਮੇ ਪਾਏ।
ਆਪੇ ਦੱਸ ਕੇ ਜਤਨ ਕਰਾਏ, ਪੂਜਾ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰਾਈ ਏ ॥
ਗੱਲ ਰੌਲੇ ਲੋਕਾਂ ਪਾਈ ਏ.....

03. ਪੁੱਤਰ ਤੁਸਾਂ ਦੇ ਉੱਪਰ ਪੀੜਾ, ਗੁੜ ਚਾਵਲ ਮੰਗਾਓ ਲੀੜਾ।
ਜੰਜੂ ਪਾਓ ਲਾਹੋ ਬੀੜਾ, ਚੂਲ਼ੀ ਤੁਰਤ ਪਵਾਈ ਏ ॥
ਗੱਲ ਰੌਲੇ ਲੋਕਾਂ ਪਾਈ ਏ.....

04. ਪੀੜ ਨਹੀਂ ਐਂਵੇ ਨਿਕੱਲਣ ਲੱਗੀ, ਰੋਕ ਰੁਪਈਆ ਭਾਂਡੇ ਢੱਗੀ।
ਹੋਵੇ ਲਾਖੀ ਦਰੁਸਤ ਨ ਬੱਗੀ, ਬੁੱਲ੍ਹਾ ਬਾਤ ਬਣਾਈ ਏ ॥
ਗੱਲ ਰੌਲੇ ਲੋਕਾਂ ਪਾਈ ਏ.....

05. ਪਿਰਤਮ ਚੰਡੀ ਮਾਤ ਬਣਾਈ, ਜਿਸ ਨੂੰ ਪੂਜੇ ਸਰਬ ਲੁਕਾਈ।
ਪਾਛੀ ਵੱਢ ਕੇ ਜੰਜ ਚੜ੍ਹਾਈ, ਡੋਲੀ ਠੂ ਢੂਮ ਆਈ ਏ ॥
ਗੱਲ ਰੌਲੇ ਲੋਕਾਂ ਪਾਈ ਏ.....

06. ਭੁੱਲ ਖੁਦਾ ਨੂੰ ਜਾਣ ਖੁਦਾਈ, ਬੁੱਤਾਂ ਅਗੇ ਸੀਸ ਨਿਵਾਈ।
ਜਿਹੜੇ ਘੜ ਕੇ ਆਪ ਬਣਾਈ, ਸ਼ਰਮ ਰਤਾ ਨਾ ਆਈ ਏ ॥
ਗੱਲ ਰੌਲੇ ਲੋਕਾਂ ਪਾਈ ਏ.....

07. ਦੇਖੋ ਤੁਲਸੀ ਮਾਤ ਬਣਾਈ, ਸਾਲਗਰਾਮੀਂ ਸੰਗ ਪਰਨਾਈ।
ਹੱਸ-ਹੱਸ ਡੋਲੀ ਚਾ ਚੜ੍ਹਾਈ, ਸਾਲ਼ਾ ਸਹੁਰਾ ਬਣੇ ਜਵਾਈ ਏ ॥
ਗੱਲ ਰੌਲੇ ਲੋਕਾਂ ਪਾਈ ਏ.....

08. ਧੀਆਂ ਭੈਣਾਂ ਸਭ ਵਿਆਹਵਣ, ਪਰਦੇ ਆਪਣੇ ਆਪ ਕਜਾਵਣ।
ਬੁੱਲਾ ਸ਼ਾਹ ਕੀ ਆਖਣ ਆਵਣ, ਮਾਤਾ ਕਿਸੇ ਵਿਆਹੀ ਏ ॥
ਗੱਲ ਰੌਲੇ ਲੋਕਾਂ ਪਾਈ ਏ.....

09. ਸ਼ਾਹ ਰਗ ਥੀਂ ਰੱਬ ਦਿਸਦਾ ਨੇੜੇ, ਕਾਜੀ, ਪੰਡਤਾਂ ਪਾਏ ਝੇੜੇ।
ਵਾਂਕੇ ਝਗੜੇ ਕੌਣ ਨਿਵੇੜੇ, ਭੱਜ-2 ਉਮਰ ਗਵਾਈ ਏ ॥
ਗੱਲ ਰੌਲੇ ਲੋਕਾਂ ਪਾਈ ਏ.....

10. ਬੁੱਲ੍ਹਾ ਆਪੇ ਭੁੱਲ ਭੁਲਾਇਆ, ਆਪੇ ਚਿਲਿਆਂ ਵਿੱਚ ਦਬਾਇਆ।
ਆਪੇ ਹੋਕਾ ਦੇ ਸੁਣਾਇਆ, ਮੁਝ ਮੇਂ ਭੇਤ ਨ ਕਾਈ ਏ ॥
ਗੱਲ ਰੌਲੇ ਲੋਕਾਂ ਪਾਈ ਏ.....

ਕੀਮ, ਅਕਲ ਤੁਸਾਡੀ ਜਾਈ ਏ ॥

11. ਗਰਮ ਸਰਦ ਹੋ ਜਿਸਨੂੰ ਪਾਲ਼ਾ, ਹਰਕਤ ਕੀਤਾ ਚਿਹਰਾ ਕਾਲ਼ਾ।
ਤਿਸ ਨੂੰ ਆਖਣ ਜੀ ਸੁਖਾਲਾ, ਇਸ ਦੀ ਕਰੋ ਦਵਾਈ ਏ ॥
ਗੱਲ ਰੌਲੇ ਲੋਕਾਂ ਪਾਈ ਏ.....

12. ਅੱਖੀਆਂ ਪੱਕੀਆਂ ਆਖਣ ਆਈਆਂ, ਅਸਲੀ ਸਮਝ ਕੇ ਆਉਣੀ ਮਾਈਆਂ।
ਆਪੇ ਭੁੱਲ ਗਈਆਂ ਹੁਣ ਸਾਈਆਂ, ਹੁਣ ਤੀਰਥ ਪਾਸ ਸੁਧਾਈ ਏ ॥
ਗੱਲ ਰੌਲੇ ਲੋਕਾਂ ਪਾਈ ਏ.....

13. ਪੋਸਤ ਆਖੇ ਮਿਲ ਅਫੀਮ, ਬੰਦਾ ਭਾਲੇ ਕਾਦਰ ਕਰੀਮ।
ਨਾ ਕੋਈ ਦੱਸੇ ਗਿਆਨ ਹਕੀਮ, ਅਕਲ ਤੁਸਾਡੀ ਜਾਈ ਏ ॥
ਗੱਲ ਰੌਲੇ ਲੋਕਾਂ ਪਾਈ ਏ.....

14. ਜੇ ਕੋਈ ਦਿਸਦਾ ਇਹੋ ਪਿਆਰਾ, ਬੁੱਲ੍ਹਾ ਆਪੇ ਵੇਖਣਹਾਰਾ।
ਆਪੇ ਵੇਦ ਕੁਰਾਨ ਪੁਕਾਰਾ, ਜੋ ਸੁਫਲੋਂ ਵਸਤ ਭੁਲਾਈ ਏ ॥
ਗੱਲ ਰੌਲੇ ਲੋਕਾਂ ਪਾਈ ਏ.....

ਗੱਲ ਰੌਲੇ ਲੋਕਾਂ ਪਾਈ ਏ। ਗੱਲ ਰੌਲੇ ਲੋਕਾਂ ਪਾਈ ਏ।

**पृष्ठ 5 का शेष....**

**''बन्दौं गुरू पद कंज कृपा, सिन्धु नर रूप हरि।**
**महां मोह तम पुंज जासू वचन रवि करनिकर।।''**

मैं गुरू महाराज जी के कमल रूपी चरणों की वन्दना करता हूं जो नर रूप में हरि है। महां मोह, अन्धकार का ऐसे नाश करने वाले हैं जिन का वचन सूर्य की करनी करता है। मेरा भाई छोटी-छोटी बातों में, प्रलोभनों में न अटक बहकावे में अटका तो जीवन व्यर्थ चला जाएगा रह। यह सन्देशा देते बहुत देर हो गई पर जब भी मानेगा तो तेरे मन से ही बात बनेगी। समझेगा तो ही मानेगा अगर चतुरमुखी ब्रह्मा जी आ कर चार मुख से चर्चा करें तो भी तू तब तक नहीं मान सकता जब तक हृदय से न समझे मनुष्य का शरीर तुझे मिला है, जब तूं इच्छा करेगा, अपने कल्याण की इच्छा आप करेगा, जब तूं खुद कल्याण की कामना करेगा, तो कल्याण होगा।

बातों से कल्याण होने का नहीं। इसके साथ-साथ कहने जा रहे थे कि वो नाम प्रकाश स्वरूप है, बातें नहीं। वो नाम घट में है, मां के गर्भ में भी सुमिरण करता था। बस उसे जानना है। उस के आगे फिर किसी भी चीज़ की जरूरत नहीं रहती। डण्डों, पाखण्डों की कोई जरूरत या गुंजाईश नहीं, भगवान मिल जाए तो यह पाखण्ड हटता है

**सदगुरू मिले जो सांचा पलट कीड़े से भृंग होकर**
**समाया अपने में आप फिर मैं, मिसाल जले तरंग होकर**

# ਕਲਿਆਣ ਦੇ ਵਚਨ

**ਜੈਸੇ ਜਲ ਮਹਿ ਕਮਲ ਨਿਰਾਲੰ ਮੁਰਗਾਬੀ ਨੈਸਾਨੇ।**
**ਸੁਰਤ ਸ਼ਬਦ ਭਵਸਾਗਰ ਤਰੀਐ ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਬਖਾਨੇ॥**

**ਪ੍ਰਭੂ ਪ੍ਰੇਮੀ ਸੱਜਣੋ,**

ਇੱਕ ਮਹਾਂਪੁਰਖ ਦੇ ਜੀਵਨ ਦੀ ਇੱਕ ਘਟਨਾ ਤੋਂ ਚਰਚਾ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤੀ ਜਾਵੇਗੀ। ਇੱਕ ਬਾਰ ਇੱਕ ਸੰਤ ਅਤੇ ਉਹਨਾਂ ਦਾ ਇੱਕ ਸੇਵਕ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਚਰਚਾ ਕਰਦੇ-ਕਰਦੇ ਜਾ ਰਹੇ ਸੀ। ਚਲਦੀ ਚਰਚਾ ਚ ਸੇਵਕ ਆਪਣੇ ਸਦਗੁਰੂ ਪਾਸੋਂ ਇੱਕ ਪ੍ਰਸ਼ਨ ਪੁੱਛਦਾ ਹੈ, "ਸਤਿਗੁਰੋ! ਕਿਰਪਾ ਕਰਕੇ ਨਾਮ ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿੱਚ ਸਮਝਾਉ?" ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਨੇ ਫਰਮਾਇਆ, "ਜਾਉ ਅਤੇ ਕਿਸੇ ਤੋਂ ਗੁੜ ਮੰਗ ਕੇ ਲਿਆਉ।"

ਸੇਵਕ ਚਲਿਆ ਗਿਆ ਤੇ ਗੁੜ ਲੈ ਆਇਆ। ਫਿਰ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਨੇ ਆਗਿਆ ਕੀਤੀ, "ਜਾਉ ਹੁਣ ਇੱਕ ਗੁੰਗਾ ਆਦਮੀ ਲੱਭ ਲਿਆਉ।" ਸੇਵਕ ਆਗਿਆ ਮੰਨ ਕੇ ਚਲਿਆ ਗਿਆ ਤੇ ਗੁੰਗਾ ਆਦਮੀ ਵੀ ਲੱਭ ਲਿਆਇਆ। ਫਿਰ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਨੇ ਆਗਿਆ ਕੀਤੀ, "ਇਹ ਗੁੜ ਦੀ ਡਲੀ ਤੋੜ ਕੇ ਥੋੜਾ ਜਿਹਾ ਇਸ ਦੇ ਮੂੰਹ ਵਿੱਚ ਪਾਉ।" ਭਗਤ ਨੇ ਐਸਾ ਹੀ ਕੀਤਾ। ਤਾਂ ਮਹਾਂਪੁਰਖਾਂ ਨੇ ਉਸ ਗੁੰਗੇ ਕੋਲੋਂ ਪੁੱਛਿਆ, "ਕਹੋ ਭਗਤ। ਸਵਾਦ ਕੈਸਾ ਹੈ?" ਗੁੰਗੇ ਨੇ ਇਸ਼ਾਰਾ ਤਾਂ ਕੀਤਾ ਪਰ ਦੱਸ ਕੁੱਝ ਨ ਸਕਿਆ।

ਇੰਨੇ ਨੂੰ ਸੇਵਕ ਆਖਣ ਲੱਗਾ, "ਮਹਾਰਾਜ! ਇਹ ਬੇਚਾਰਾ ਕੀ ਦੱਸੇਗਾ। ਇਹ ਤਾਂ ਗੁੰਗਾ ਹੈ।" ਤਾਂ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਨੇ ਕਿਹਾ, "ਭਗਤ! ਇਸੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦਾ ਨਾਮ ਕੀ ਹੈ, ਇਹ ਦੱਸਣ ਲਈ ਹਰ ਆਦਮੀ ਗੁੰਗਾ ਹੈ। ਉਸ ਨਾਮ ਨੂੰ ਜੀਭ ਨਾਲ ਕਿਹਾ ਹੀ ਨਹੀਂ ਜਾ ਸਕਦਾ।

**ਆਤਮ ਅਨੁਭਵ ਗਿਆਨ ਕੀ**
**ਜੋ ਕੋਈ ਪੂਛੇ ਬਾਤ।**
**ਗੁੰਗੇ ਕੇਰੀ ਸਰਕਰਾ ਕਹੇ ਕੌਨ ਮੁਖ ਸਵਾਦ॥**

ਗੁੰਗਾ ਆਦਮੀ ਇਸ਼ਾਰੇ ਤਾਂ ਕਰ ਸਕਦਾ ਹੈ ਪਰ ਕਹਿ ਨਹੀਂ ਸਕਦਾ ਕਿ ਸਵਾਦ ਕੀ ਹੈ। ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਨਾਮ ਕੀ ਹੈ ਇਹ ਕੋਈ ਕਹਿ ਨਹੀਂ ਸਕਦਾ। ਗੁੰਗਾ ਆਦਮੀ ਗੁੜ ਦੀ ਮਿਠਾਸ ਨੂੰ ਅਨੁਭਵ ਕਰਦਾ ਹੈ ਜਾਂ ਇਹ ਕਹਿਣਾ ਜਿਆਦਾ ਠੀਕ ਹੈ ਕਿ ਗੁੰਗੇ ਦਾ ਦਿਲ ਜਾਣਦਾ ਹੈ ਕਿ ਸਵਾਦ ਕੀ ਹੈ? ਮਿਠਾਸ ਕੀ ਹੈ? ਪਰ ਉਸ ਦੀ ਜੀਭ ਆਖਣ ਦੇ ਕਾਬਿਲ ਨਹੀਂ ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਨਾਲ ਹਰ ਇੰਸਾਨ ਦਾ ਦਿਲ ਪਰਮਾਤਮਾ ਨੂੰ ਅਨੁਭਵ ਤਾਂ ਕਰ ਸਕਦੈ ਪਰ ਜੀਭ ਉਸ ਅਨੁਭਵ ਨੂੰ ਬਿਆਨ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦੀ। ਮਹਾਂਪੁਰਖਾਂ ਨੇ ਸਾਫ ਸਾਫ ਸਮਝਾਇਆਂ ਹੈ ਕਿ ਜੇ ਕੋਈ ਆਤਮ ਅਨੁਭਵ ਦੀ, ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੇ ਗਿਆਨ ਦੀ, ਈਸ਼ਵਰ ਦੀ ਗੱਲ ਪੁੱਛਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਜਬਾਵ ਉਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀ ਹੀ ਆਵੇਗਾ। ਜਿਹੋ ਜਿਹਾ ਗੁੰਗੇ ਨੂੰ ਗੁੜ ਦਾ ਸਵਾਦ ਪੁੱਛਣ ਤੇ ਮਿਲਦਾ ਹੈ।

ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੇ ਨਾਮ ਦੀ ਮਹਿਮਾ ਤਾਂ ਇਸ ਜੀਭ ਨਾਲ ਖੂਬ ਗਾਈ ਜਾਂਦੀ ਹੈ, ਆਦਿ ਕਾਲ ਤੋਂ ਗਾਈ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ ਪਰ ਨਾਮ ਨੂੰ ਨਾ ਕੋਈ ਬਖਾਨ ਕਰ ਸਕਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਨਾ ਹੀ ਕੋਈ ਬਖਾਨ ਕਰ ਸਕੇਗਾ। ਨਾਮ ਨੂੰ ਸੂਫੀ ਮਹਾਂਪੁਰਖਾਂ ਨੇ ਇੱਕ ਹੋਰ ਸ਼ਬਦ ਨਾਲ ਸਮਝਾਉਣਾ ਚਾਹਿਆ ਹੈ ਉਹ ਹੈ ਇਸ਼ਕ।

ਇਕ ਬਾਰ ਬਾਦਸ਼ਾਹ ਅਕਬਰ ਨੇ ਸੰਤ ਦਾਦੂ ਦਿਆਲ ਕੋਲੋਂ ਸੀਕਰੀ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਸ਼ਨ ਪੁੱਛੇ।

**ਦਾਦੂ ਗੁਰੂ ਸੇ ਬਾਦਸ਼ਾਹ, ਪੂਛੀ ਚਾਰ ਸੁ ਬਾਤ।**
**ਜਾਤਿ ਅੰਗ ਬਜੂਦ ਰੰਗ,**
**ਸਾਹਿਬ ਕੇ ਵਿਖਿਆਤ॥**

ਬਾਦਸ਼ਾਹ ਨੇ ਦਾਦੂ ਜੀ ਮਹਾਰਾਜ ਨੂੰ ਆਖਿਆ ਕਿ ਦੱਸੋ ਪ੍ਰਭੂ ਦੀ ਜਾਤ ਕੀ ਹੈ? ਉਸਦੀ ਹੋਂਦ (Existence) ਕੀ ਹੈ? ਉਸਦਾ ਸ਼ਰੀਰ ਕੀ ਹੈ? ਉਸਦਾ ਰੰਗ ਕੈਸਾ ਹੈ?

ਦਾਦੂ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਜਬਾਵ ਦਿੱਤਾ—

**ਇਸ਼ਕ ਅਲਹ ਕੀ ਜਾਤਿ ਹੈ**
**ਇਸ਼ਕ ਅਲਹ ਕਾ ਅੰਗ।**
**ਇਸ਼ਕ ਅਲਹ ਬਾਜੂਦ ਹੈ**

**ਇਸ਼ਕ ਅਲਹ ਕਾ ਰੰਗ॥**

ਭਾਵ ਕਿ ਪ੍ਰੇਮ ਹੀ, ਇਸ਼ਕ ਹੀ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਜਾਤਿ ਹੈ, ਇਹੋ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦਾ ਅੰਗ ਹੈ ਇਹੋ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦਾ ਬਜੂਦ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸ਼ਕ ਹੀ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦਾ ਰੰਗ ਹੈ। ਸੰਖੇਪ ਚ ਕਿਹਾ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਸਮਝ ਹੀ ਉਸਨੂੰ ਆਈ ਜੋ ਪ੍ਰੇਮ ਦੀ ਭਾਸ਼ਾ ਜਾਣਦਾ ਹੈ।

**ਮੁਸਲਮਾਨ ਨਹੀਂ ਸਹੁਰਾ ਰੱਬ ਦਾ**
**ਹਿੰਦੂ ਨਹੀਉ ਸਾਲ਼ਾ।**
**ਰੱਬੀ ਇਸ਼ਕ ਮੁਹਬੱਤ ਬਾਝੋਂ ਮੂੰਹ ਦੋਹਾਂ ਦਾ ਕਾਲ਼ਾ॥**

ਜਦੋਂ ਵੀ, ਜਿੱਥੇ ਵੀ, ਜਿਸਨੂੰ ਵੀ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਸੋਝੀ ਪਈ ਜਾਂ ਰੱਬੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਆਈ ਉਹ ਸਿਰਫ਼ ਪ੍ਰੇਮ ਚੋਂ ਹੀ ਆਈ।

**ਜਪ ਤਪ ਪੂਜਾ ਪਾਠ ਕਰ ਮਨ ਮੇਂ ਧਰੇ ਘੁਮਾਨ।**
**ਨਾਨਕ ਨਿਸ਼ਫਲ ਜਾਤ ਹੈ**
**ਜਿਉਂ ਕੁੰਚਰ ਇਸਨਾਨ॥**

ਬਾਕੀ ਸਭ ਕਾਜ( ਚਾਹੇ ਪਾਠ ਹਨ, ਚਾਹੇ ਧਾਰਮੀਕ ਰੀਤੀਆਂ, ਚਾਹੇ ਕਰਮ ਕਾਂਡ) ਅਹੰਕਾਰ ਜਾਂ ਹਉਮੈ ਨੂੰ ਜਨਮ ਦਿੰਦੇ ਹਨ ਜਦੋਂ ਕਿ ਪ੍ਰੇਮ ਦਾ ਮਾਰਗ ਹਉਮੈ ਵੱਲ ਕਦੇ ਵੀ ਨਹੀਂ ਲੈ ਜਾਂਦਾ। ਪ੍ਰੇਮ ਅਤੇ ਹਉਮੈ ਕਦੇ ਇਕੱਠੇ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੇ। ਪ੍ਰੇਮ ਦਾ ਅਰਥ ਹੀ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਸਮਰਪਣ ਜਾਂ ਵਾਰਨਾ। ਨੌਛਾਵਰ ਕਰਨਾ ਜਾ ਚੜ੍ਹਾ ਦੇਣਾ। ਜਿੱਥੇ ਬਾਕੀ ਸਭ ਧਰਮ, ਕਰਮ, ਕਿਰਿਆਵਾਂ ਮਨੁੱਖੀ ਮਨ ਨੂੰ ਜਕੜ ਲੈਂਦੀਆਂ ਹਨ ਉੱਥੇ ਪ੍ਰੇਮ ਇਹਨਾਂ ਸਭਨਾਂ ਤੋਂ ਮੁਕਤ ਕਰ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਇਸੇ ਲਈ ਆਦਮੀ ਧਰਮ ਕਰਮ ਨੂੰ ਨਿਯਮ ਨਾਲ ਤਾ ਕਰ ਸਕਦਾ ਹੈ, ਪਰ ਪ੍ਰੇਮ ਦਾ ਕਦੇ ਵੀ ਕੋਈ ਨਿਯਮ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਦਾ।

**ਜਹਾਂ ਪ੍ਰੇਮ ਤਹਾਂ ਨੇਮ ਨਹੀਂ,**
**ਜਹਾਂ ਨੇਮ ਨਹੀਂ ਪ੍ਰੇਮ।**
**ਪ੍ਰੇਮ ਪਿਆ ਕਾ ਤੋ ਮਿਲੇ,**
**ਜੋ ਹੋ ਜਾਏ ਚਿੱਤ ਰੇਨ॥**

ਭਗਤੀ, ਪੜ੍ਹਾਈ ਅਤੇ ਪ੍ਰੇਮ ਤਾਂ ਤਿਨੋਂ ਹੈ ਹੀ ਅਜਿਹੇ ਕਿ ਜੋ ਬਿਨਾਂ ਸ਼ੌਂਕ ਤੋਂ ਹੋ ਸਕਦੇ ਹੀ ਨਹੀਂ।

**ਤਾਲੀਮ ਇਸ਼ਕੋ ਇਬਾਦਤ ਕੁਛ ਐਸੀ ਸ਼ੈ ਹੈ। ਜੋ ਸੀਖਨੇ ਸੇ ਨਹੀਂ ਬਸ ਸ਼ੌਕ ਸੇ ਹੀ ਆ ਜਾਤੀ ਹੈ॥**

ਜਦੋਂ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਇਹ ਸ਼ੌਕ ਜਾਗ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਉਸਨੂੰ ਸਮਝਾਉਣ ਦੀ ਜਰੂਰਤ ਨਹੀਂ ਰਹਿ ਜਾਂਦੀ। ਪ੍ਰੇਮ ਦਾ ਤਾਂ ਮਾਰਗ ਹੀ ਐਸਾ ਹੈ ਕਿ

**ਜੋ ਤਉ ਪ੍ਰੇਮ ਖੇਲਣ ਕਾ ਚਾਉ**
**ਸਿਰ ਧਰ ਤਲੀ ਗਲੀ ਮੇਰੀ ਆਉ।**
**ਇਤ ਮਾਰਗ ਪੈਰ ਧਰੀਜੈ**
**ਸਿਰ ਦੀਜੈ ਕਾਣ ਨ ਕੀਜੈ॥**

ਬਿਨਾਂ ਸਿਰ ਦਿੱਤੇ ਇਹ ਮਾਰਗ ਅਪਣਾਇਆ ਹੀ ਨਹੀਂ ਜਾ ਸਕਦਾ। ਇਸੇ ਗੱਲ ਤੋਂ ਡਰ ਕੇ ਇੰਸਾਨ ਸੋਚਦਾ ਹੈ ਕਿ ਜੋਂ ਬਿਨਾਂ ਸਿਰ ਦਿੱਤੇ ਹੀ ਪੂਜਾ ਪਾਠ ਨਾਲ, ਜਪਾਂ-ਤਪਾਂ ਨਾਲ ਕੰਮ ਬਣ ਰਿਹਾ ਹੈ ਤਾਂ ਜਰੂਰਤ ਕੀ ਹੈ ਸਿਰ ਦੇਣ ਦੀ। ਕਈ ਸੱਜਣ ਤਾਂ ਸਿਰ ਦੇਣ ਦਾ ਅਰਥ ਹੀ ਨਹੀਂ ਸਮਝ ਪਾਉਂਦੇ। ਉਹ ਸਮਝਤੇ ਹਨ ਕਿ ਸ਼ਾਇਦ ਸਿਰ ਕੱਟ ਕੇ ਰੱਖਣਾ ਪਵੇਗਾ, ਚੜ੍ਹਾਉਣਾ ਪਵੇਗਾ।

ਪਰ ਹੇ ਪ੍ਰੇਮੀ! ਸਿਰ ਦੇਣ ਦਾ ਅਰਥ ਹੈ ਆਪਣੀ ਸੋਚ, ਸਮਝ, ਅਕਲਮੰਦੀ ਆਦਿ ਦਾ ਅਹੰਕਾਰ ਸਦਗੁਰੂ ਦੇ ਚਰਣਾਂ ਤੇ ਵਾਰਨਾ। ਬਹੁਤ ਹੀ ਦੀਨ-ਹੀਨ-ਨੀਵੇਂ ਹੋ ਕੇ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਪਾਸ ਸਿਰ ਨਿਵਾ ਕੇ ਗਿਆਨ ਦੀ ਗੱਲ ਪੁਛੱਣਾ, ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਦੀਆਂ ਭੌਤਿਕ ਸਭ ਸਥਿਤੀਆਂ-ਸਿਧਾਂਤਾਂ ਨੂੰ ਛੱਡ ਕੇ ਕੇਵਲ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਰੂਪ ਸਮਝ ਕੇ ਉਹਨਾਂ ਪਾਸੋਂ ਕੇਵਲ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨ ਦੀ ਗੱਲ ਪੁਛੱਣਾ।

**ਜੋ ਜਾਣਕਾਰੀ ਸਮੇ ਦੇ ਮਹਾਂਪੁਰਖ ਨੇ ਇੱਕ ਨਜ਼ਰ ਵਿੱਚ ਦੇ ਜਾਣੀ ਹੈ ਉਹ ਗ੍ਰੰਥਾਂ, ਕਿਤਾਬਾਂ, ਮੂਰਤੀਆਂ, ਆਰਤੀਆਂ ਵਿੱਚੋਂ ਕਦੇ ਵੀ ਨਹੀਂ ਮਿਲਦੀ।** ਸਦਗੁਰੂ ਦੇ ਪਾਸ ਹੈ ਕਿਰਪਾ, ਸਦਗੁਰੂ ਦਾ ਅਰਥ ਹੀ ਹੈ ਇੱਕ ਐਸਾ ਸ਼ੀਸ਼ਾ ਜਿਸ ਵਿੱਚ ਜੀਵ ਆਪਣੀ ਪੂਰਣਤਾ ਨੂੰ ਵੇਖ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਸਦਗ੍ਰੰਥਾਂ ਨੂੰ ਪੜ੍ਹ ਕੇ ਸ਼ੀਸ਼ੇ ਖੜੇ ਹੀ ਹੁੰਦੇ ਨੇ ਪਰ ਸਦਗੁਰੂ ਉਹ ਹਸਤੀ ਹੈ ਜਿਸਨੂੰ ਵੇਖਦਿਆਂ ਹੀ ਸੰਸ਼ੇ ਪੰਛੀਆਂ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਉੜ ਜਾਂਦੇ ਨੇ। ਗ੍ਰੰਥਾ ਨੇ ਕਈ ਸਿਧਾਂਤਾਂ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਚਲਣਾ ਹੈ ਪਰ ਸਦਗੁਰੂ ਸਦਾ ਅਤੇ ਸਿਰਫ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਸੋਝੀ ਹੀ ਪਾਵੇਗਾ।

* * * *

# नाभिकेन्द्र और हमारा स्वास्थ

गताङ्क से आगे.....

**अस्वस्थ नाभि के लक्षणः—**

नाभि का हमारे पाचन तंत्र के साथ गहरा संबंध होता है। नाभि के असुंतलन से खट्टी डकारें आना, अपच, कब्ज, दस्त आदि शिकायतें हो सकती हैं।

नाभि के असुंतलन से अचानक वजन घटने या बढ़ने लगता है यदि नाभि अस्वस्थ हो तो सबसे पहले शरीर की चमक कम हो जाती है, चेहरे पर झाइयां, कालापन और आँखों के नीचे काले गड्डे हो जाते हैं, सुस्ती और चिड़चिड़ापन रहता है। भूख नहीं लगती, बेचैनी रहती है।

**स्वस्थ नाभि के लक्षण : —**

नाभि चेतना का मूल केन्द्र है, इसके संतुलन से तन, मन और भाव तीनों स्वस्थ रहते हैं।

स्वस्थ नाभि वाला व्यक्ति स्फूर्ति वाला होता है।

नाभि केन्द्र संतुलित होने से मन और मस्तिष्क संतुलित रहते हैं व्यक्ति तनावग्रस्त नहीं रहता।

नाभि संतुलित रहने से पेट संबंधी विकार नहीं होंगे।

नाभिकेन्द्र स्वस्थ रहने से स्मरण शक्ति बढ़ेगी। नाभिचक्र स्वस्थ रहने से आपके शरीर की उर्जा बढ़ेगी, आभामंडल आभायुक्त होगा।

**नाभि चक्र का परीक्षण कैसे करें: —**

**हाथों के पोरों द्वाराः—**

सर्वप्रथम कोहनी को नाभि पर रखकर दोनों हाथों की कलाई को मिलाते हुए हथेली के मध्य चन्द्राकार को मिलायें, दोनों छोटी अंगुलियों के पोरों को मिलायें यदि पोर एक दूसरे से नहीं मिलते हैं तो नाभि असंतुलित है।

**पैर के अंगूठे के द्वाराः—**

प्रातःकाल खाली पेट सीधे लेटकर, दोनों पैरों को सटाकर दोनों अंगूठों को देखें यदि अंगूठा छोटा या बड़ा दिखे तो नाभि असंतुलित है।

**नाभि स्पन्दन द्वाराः—**

प्रातःकाल खाली पेट सीधे होकर लेटकर, दोनों पैरों को सटाकर दोनों अंगूठों से दबाव दें यदि स्पन्दन महसूस होता है तो नाभि संतुलित है यदि नाभि पर स्पन्दन महसूस नहीं होता तो नाभि असंतुलित है।

यदि नाभि ऊपर की ओर खिसकी हुई हो तो कब्ज गैस, हृदय में जलन, अनिद्रा की समस्या हो सकती है।

यदि नाभि नीचे की और खिसकी हुई हो तो पेट दर्द, भूख नहीं लगना आदि समस्या हो सकती है।

नाभि संतुलित करने के उपायः—

नाभि को संतुलित करने का सबसे अच्छा उपाय हो योगासन।

उत्तापनपादासन, धनुरासन, नाभ्यासन, मत्स्यासन इन आसनों को हमेशा करना चाहिए। जिससे नाभि हमेशा यथास्थान पर रहती है।

नाभि का चक्र संतुलित रखने का अतिउत्तम उपाय है— नाभिक्रिया। यदि व्यक्ति प्रतिदिन खाली पेट नाभिक्रिया करे तो पुरानी असुंतलित नाभि संतुलित हो जाती है।

**नाभि क्रिया की विधिः—**

पीठ के बल जमीन पर लेटें। श्वास भरते हुए धीरे-धीरे दायें हाथ को ऊपर की और उठायें सिर को पीछे की और ले जायें। धीरे-धीरे श्वास छोड़ते

शेष पृष्ठ 11 पर.....

# ◆ प्रभु का कार्य ◆

एक बार बीरबल से सम्राट अकबर ने तीन इक्टठे प्रश्न कर डाले। प्रश्न थे ईश्वर कहां रहता है ? कैसे मिलता है ? क्या करता है ? ये तीन पेचीदा प्रश्न हल करने हेतु कुछ समय मांगा। सांय काल यह देखकर कि बीरबल काफी तनाव में है, उसके पुत्र ने पूछा, ''पिताजी, आज आप काफी चिंतित लग रहे हैं, क्या कोई खास बात है ? यह सुनकर बीरबल ने उसे तीनों प्रश्नों के बारे में बताया। प्रश्न सुनते ही पुत्र खुशी से बोला, ''बस इतनी सी बात।'' बीरबल भी कुछ समझ न पाया कि आखिर उसका पुत्र इतना प्रसन्न क्यों हो गया।

अगले दिन बीरबल और उसका पुत्र सभा में पहुंचे। बादशाह ने पूछा, ''बीरबल ! क्या जबाव ले आए ?'' बीरबल कहता, ''हजूर ! आज जवाब मेरा बेटा देगा।'' बादशाह ने प्रश्न दोहराए। पहला प्रश्न था:–ईश्वर कहां रहता है ? लड़के ने कहा, ''हजूर ! दूध मंगवाए और थोड़ी शक्कर भी।'' बादशाह ने दोनों चीज़े मंगवाकर उसे दे दी। लड़के ने शक्कर दूध में घोलकर बादशाह को पीने के लिए दे दिया। बादशाह ने स्वाद चखा। लड़के ने तब पूछा, ''हजूर कैसा है ?'' बादशाह कहते, ''मीठा है।'' लड़के ने कहा, ''हजूर ! पर मीठा कहां है ? क्या आप उसे अलग कर सकते हैं ?'' बादशाह ने कहा, ''नहीं।'' लड़का कहता, ''इसी प्रकार परमात्मा भी सर्वत्र होते हुए अलग करके समझा नहीं जा सकता केवल उसका अनुभव रूपी स्वाद लिया जा सकता है।

दूसरा प्रश्न आया कि ईश्वर कैसे मिलता है ? लड़के ने थोड़ा दहीं मंगवाया और अकबर से कहा कि बताएं इसमें कितना माखन है। अकबर कहता कि वह तो मथने पर ही पता चलेगा। लड़का कहता, '' जी इसी प्रकार स्वयं को मथें तो पता चलेगा कि ईश्वर क्या है उससे मेल भी तभी हो सकेगा जब तुम स्वयं को स्वयं में मथ डालो।

अब बचा था अंतिम प्रश्न। प्रभु या परमात्मा क्या करता है ? लड़का कहता, ''बादशाह हजूर ! उस प्रभु की लीला का ज्ञान तो तभी संभव है यदि आप मुझे अपना गुरू बनाएं।'' बादशाह कहते, ''ठीक है। तुम अभी से मेरे गुरू हो।'' लड़का कहता, ''तो अब आप यह भी जानते होंगे कि गुरू को ऊंचा स्थान दिया जाता है। आप नीचे आएं।'' यह सुनकर अकबर सिंहासन से उतर आया और लड़का ऊपर बैठ गया।

थोड़ी देर बाद लड़का नीचे आया और कहता, ''सम्राट ! उम्मीद है आपको तीनों जबाव समझ आ गये होंगे। अकबर ने कहा, ''दो तो समझ आ गये पर तीसरा नहीं कि प्रभू करता क्या है ?'' लड़का कहता, ''पहले आप सिंहासन पर थे एक पल में नीचे आ खड़े हो गये। बस यही है प्रभू का कार्य। राजा को रंक व रंक को सम्राट बनाना। □□□□

---

**पृष्ठ 10 का शेष.....**

हुए हाथ को आगे की ओर आयें। 10 बार दायें हाथ से 10 बार बायें हाथ से दस बार दोनों हाथों से करें। इसी प्रकार दायें पैर को श्वास भरते पूरा उपर उठायें और श्वास छोड़ते हुए नीचे ले लायें इसी विधि से दस बार दांये पैर से दस बार बांये पैर से दस बार दोनों पैरों से एक साथ करें।

**समाप्त** □□□□□

# विचारणीय वचन

**भगवद प्रेमी सज्जनोः—**

भगवद प्रेमी, खास कर गुरू प्रेमी आसन ग्रहण करे। क्या है भक्त का आसन ? कहोगे बैठे तो हैं। मेरा भाई काया से तो बैठे हैं, पर सहज में आमन ग्रहण करें। लौटे। मन से जहाँ-जहाँ भी गये हैं, सब बातों से हटे। आसन हृदेश में, हृदय के मन्दिर में। अर्थात शम दम। 'शम' क्या होता है, यह सन्तों का Code word है। भक्तों का Code word है, B संकेत है। शम, सम्पूर्ण संसारिक वासनाओं से चित्त को बटोर कर इच्छाओं को हटाकर सहज सन्तुष्ट होना, दूसरे शब्दों में सन्तोष धारण करना है। जितनी भी वासनाएं हैं दुःख देती हैं। जब वासनाऐं छोड़ेगा, अन्तर आत्मा में उतरेगा, तो उस समय शान्ति है और दम से तात्पर्य है इन्द्रियों का दमन, अर्थात इन्द्रियों को, मन को, स्वेच्छा से ना विचरने देना, संयम में लाना। आंखे जो देखे, क्या देखना, क्या नहीं देखना, इनके ऊपर निग्रह, यानि ध्यान दें। सोच कर विचार कर शास्त्र मर्यादा में विचर। कान क्या सुने क्या न सुनें विचार कर। जिह्वा से क्या बोले क्या न बोले और अन्तःकरण बाहिय करण दोनों प्रकार से शुद्धि जिसने धारण की, उसने धारण की, उसने मान लो आसन किया है। उसने तैयारी की है सत्संगी होने की, सत्त में उतरने की।

एक बात याद रखना, मेरा भाई यहाँ जो भी पाप करोगे, मिलावट करोगे, हेराफेरी करोगे, छल-कपट झूठ का सहारा लोगे, उससे आमदनी चाहे बढ़ती हुई दिखाई देवे पर वो अरिंड़ के पेड़ से ज्यादा ना हो जाएगी। अरिंड का पेड़ जल्दी-जल्दी बढ़ा फल लगे, हवा का झोंका आया, फल समेत गिर कर एक तरफ हुआ। कुछ अर्थ सिद्ध न हुआ। ऐसे ही पाप कर्म से चाहे कितना बड़ा बन गया, कितना धन हो गया देखते-देखते। चाहे ऐश परस्ती में घूमने लग गया या सात विलायतों का चक्र काट। मेरा भाई हशर बुरा होगा। देना उसी को पड़ेगा, जिसने पाप किया, इसलिए पाप से बच। यह आसन है। जब पाप से बचने का निर्णय ले लिया तो—

**रूखी सूखी खाय के, ठण्ड़ा पानी पी।**
**देख पराई चोपड़ी, मत ललचाए जी।।**

और कोई करेगा, करने दे, कोई ऐसे चले तो चलने दे। जो चित्त से शान्त रहे, न विघन हो, और न मन चलाएमान हो। जो ऐसी स्थिती में विचरे, तो यह चित्त का आसन है। विघन क्या हैं ? दुःख क्या है ? जगत में सच पूछो तो ये राजा, महाराजाओं में, धनियों में, निर्धनों में तो होगा ही होगा, लेकिन यह दुःख व्याप्त है। कैसे, इसको समझना है।

कहीं एक कोई स्त्री विवाह शादी पर गई, तो किसी दूसरी महिला ने टांच कस दी, अपने पति की निरादरी करते हुए, कि देख मेरा हार कितना कीमती है, दो लखा हार है। बस अब पूर्ण जलन हो गयी। गई तो थी खुशी के लिए, जलन हो गई। जलना, ना जलना यह हमारे अपने हाथ बस में है। विवेकी हैं तो जलन क्यों, कुढ़न क्यों ? हिल क्यों गया ? अविवेकी है, अज्ञानी है। जल्दी गिर जाता है, कुछ जाता है, दुखी होता है, अशान्त होता है। यह तेरे अपने बस की बात है। तो वह स्त्री दुखी हो कर, घर आकर, निराश सी होकर बैठ गई, कोई भोजन बगैरा ना बनाए। सेठ जी घर आए, आकर पूछा, ''क्या बात हुई ?'' ऐसे सब तरह-तरह से मनाते हैं, पूछते हैं। तो सेठानी कहने लगी दो लाख का हार देखा है, हार लाकर दो मुझे दो तो मानूंगी, वर्ना नहीं। उस समय दो लाख बहुत बड़ी सम्पत्ती थी। तब पूछा क्यों कैसे ? तो

सारी बात बताई, औऱ कहा मैं तो हार लेकर रहूंगी। बस और कुछ बात नहीं। उन्होंने समझाया कि अगर दुकान, मकान, सारा कारोबार, सब कुछ दाव पर लगा दूं तो दो लाख का हार बनता है। फिर खाएंगे पीयेंगे क्या ? कहती बस मैं नहीं जानती। मर जाऊँगी जीवित न रहूँगी। तिरिया हठ ठान लिया। सेठ मुश्किल में पड़ गया। पत्नी भोजन नहीं कर रही। कोई एक मित्र था वो आया, आकर देखा, पूछा कि क्या बात है तुम निराश हो। तो सारी बात बताई। तो दोस्त ने कहा कोई बात नहीं, उसको कहो, मैं और मेरा दोस्त दो लाख का हार लेकर आ रहे हैं, तुम अच्छे भोजन का प्रबन्ध करो जल्दी। पूछा कैसे करोगे, तो कहने लगा प्रबन्ध कराउंगा। तुम चिन्ता मत करो। प्रबन्ध किया और हार लेकर आ गये। हार दिखाया और कहा कि देख सारी स्थिती दाव पर लगा दी है, अब यह न हो कि तुम लोगों को दिखाती फिरो। प्रचार करती फिरो। उनके पास तो नौकर चाकर काम धन्धा बहुत कुछ है। हमारे पास कौन है रक्षा करने के लिए कोई चोर चुका कर ना ले जाए। बस एक पाबन्दी लगा दी कि यह माननी है बात। कभी कुछ वक्त आया कि आज पड़ोस में शादी है आज तो पहन लूं ना। कहने लगे पहन लेना जब भीड़ भाड़ सी हो, जब खास वक्त हो, और फिर जल्दी उतार कर रख देना। बहुत न दिखाना किसी को। घर में एक नौकर था उसने यह बात सुन रखी थी कि दो लाख का हार है, और जैसे ही हार निकाल कर रखा गया कि स्नान करके पहनूंगी। बस वो स्नान करके आई तो देखा ना तो नौकर है ना ही वो हार है। बस अब दुख हो गया। बहुत भारी दुख हो गया। राग और द्वेष यह किसी ना किसी प्रकार से सताते हैं। वस्त्र से, भोजन से, भवन से, संतान से कई प्रकार से दुख देते हैं। मेरा भाई जो इनके चक्र में आता है, आते तो सब हैं, पर कोई थोड़ा सा आता है, कोई बहुत ज्यादा आ जाता है। थोड़ा सा आया जल्दी से हटा इसको। तो ऐसा हो सकता है:—

**त्रै गुण विषयो वेदा**

तीनों गुण किसी को छोड़ते नहीं, देवता को भी नहीं छोड़ते परन्तु जो सत्संगी है, सत्त का संग करने वाला है, सत्त में उतरने वाला है वो जल्दी जाग जाता है, वो जल्दी चोर करके देख लेता है, वो बचता है, वो जलता नहीं। त्रै की आग में:—

**''काम क्रोध मद मत्सर चोर बड़े भारी।**
**ज्ञान खड़ग दे कर में, गुरू सब संहारे।।''**

चोर तो बड़े भारी है। जैसे तैसे छुप कर बार कर देते हैं। समय कुसमय देखकर देते है। लेकिन गुरूमहाराज जी ने ज्ञान की तलवार देकर बार बार काम और क्रोध का संहार करते हैं। ज्ञान कुछ होता है। वेदों उपनिषदों में, गीता, रामायण, गुरूवाणी मे पूर्ण सन्तों के वचनों में बार बार ज्ञान शब्द आता है। लेकिन ज्ञान होता क्या ?

खाली, पढ़ लिया ग्रन्थों को, पाठ कर लिया या कुछ कथा कहानियाँ कह लो, यह ज्ञान नहीं। जो सुन लिया, कर्मकाण्ड कर लिए यह ज्ञान नहीं। और जो तपों से यज्ञों से हो वो भी ज्ञान नहीं मेरा भाई ज्ञान तो ज्ञान है, ज्ञान साथ लेकर आए हो, ज्ञान चारों युगों में एक है। दो नहीं। कोई नई बात नहीं, एक है। वहां मन्त्र का भला क्या काम। रटने का वहां क्या काम। वहां कथनी पहुंच ही नहीं सकती।

**वाणी तो पानी भरे**

जितनी भी प्रकार का वचन विलाप है, बैखरी है, मध्यमा पश्यन्ति जो भी वाणियाँ है, यह भी नहीं। ये भी ज्ञान नहीं। ज्ञान वो जाने, जिसको गुरू मिल गया, जो गुरू का हो गया, जो गुरूमुख है। दूसरा क्या जाने। जान सकता भी नहीं यह पूछो वेदों से, उपनिषदों से।

**क्रमश:.....**

Cont.....

# Dhammapada

**अक्कोच्छि मं अवधि मं, अजिनि मं अहासि मे।**
**ये च तं उपनय्हन्ति, वेरं तेसं न सम्मति।।**

Akkocchi mam avadhi mam
ajini mam ahasi me
ye ca tam upanayhanti
veram tesam na sammati. ||3||

Meaning- Verse 3: "He abused me, he ill-treated me, he got the better of me, he stole my belongings;"... the enmity of those harbouring such thoughts cannot be appeased

**अक्कोच्छि मं अवधि मं, अजिनि मं अहासि मे।**
**ये च तं नपुनय्हन्ति, वेरं तेसूपसम्मति ।।**

Akkocchi mam avadhi mam
ajini mamahasi me
ye ca tam nupanayhanti
veram tesupsammati ||4||

Meaning- Verse 4: "He abused me, he ill-treated me, he got the better of me, he stole my belongings;"... the enmity of those not harbouring such thoughts can be appeased

**Story:-**Tissa was a disciple of Gautam Budhha. He was son of the Buddha's maternal aunt. Once he was staying with the Buddha and become a bhikkhu in his old age, but he posed as a senior bhikkhu and was very pleased when visiting bhikkhus asked his permission to do some service for him.

On the other hand, he failed to perform the duties expected of junior bhikkhus; besides, he often quarrelled with the younger bhikkhus. Should anyone rebuke him on account of his behaviour he would go complaining to the Buddha, weeping, very much dissatisfied and very upset. The others also followed him to the presence of the Buddha. The Buddha told them not to harbour thoughts of enmity, for enmity could only be appeased by not harbouring enmity.

Here the message of Gautam Buddha is very clear to humanity. Buddha indirectly saying to you that you are the the owner of your peace and sorrows. It is to you how to deal the conditions with. If you always live in rememberence of ill behaviour treated with you, you can't live in peace. It doesn't matter how religious you are because the religion is not the source of peace of mind. Peace of mind is generated through your action or your living style. You can see in this world that number of people who are cosidered as very religious are living a very unpeaceful life, why? Because meaning of religion is different for them.

The meaning of religion for them is idols ,scriptures, temples, mosques

etc. Whereas True Religion is much far from these all so called religion. These so called religions can only called procedures or rituals or dead religions. TRUE religion never dies nor changes. All your religion either change or die. True religion is within you. You need not to find it in rituals, temples or any other part of these so called religion. True religion is not a lost thing which you can find. It is an understanding ,an awakening a conciousness . Untill you live in True Religion, you can't get peace of mind or You can't appeased.True religion is not a ritual. It is a way of life which is Blessed by a perfect master (SADGURU). Because

SADGURU STARTS FROM THE POINT WHERE ALL THE SO CALLED RELIGIONS END.

**To be Continued.....**

* * * *

# पत्रिका का लक्ष्य

रीतियों की पूर्ति में उलझे हुए जीवन को यूं तो हर क्षण शांति की तलाश बनी ही रहती है। संसारी व्यक्ति बारम्वाार चाहता है कि कुछ समय शांति से जीया जाए। इसके लिए वह धर्म का कई प्रकार से सहारा लेने के भ्रम में भी जीता है पर वास्तविक धर्म से कोसों दूर ऐसे सज्जन को जब तक धर्म की समझ ही न जागेगी तब तक शांति संभव नहीं। अंधेरे कमरे में गुम हुई सूई कभी किसी और प्रकाश पूर्ण स्थान पर नहीं मिलती। अपितु वहीं मिलती है जहां गुम हुई हो बशर्ते कि वहां भी प्रकाश हो गया हो।

अलखादेश पत्रिका भी इसी बात को पूरा करते हूए जीवन को वास्तविक धर्म की और मोड़ते हुए देश विदेश में अनेकानेक प्रभु भक्तों को लाभान्वित कर रही है। **हे प्रेमी! परिस्थिती कोई भी हो या भजन ध्यान में एकाग्रता न हो पाए तो उसके लिए लाभ लें अलखादेश मासिक पत्रिका का। जब समय मिले तो पत्रिका पढ़। हो सके तो किसी को पढ़ कर सुना**

**आप जपे औरां नाम जपावै, नानक निश्चय मुक्ति पावै।**
**दिवस मिलै है बीजणे—राती काटण आए।**
**दादू दिवस संभार ले, रात हरि संग जाए।।**

# ❖ ਪਤ੍ਰਿਕਾ ਦਾ ਟੀਚਾ ❖

ਰੀਤੀਆਂ ਦੀ ਪੂਰਤੀ ਵਿੱਚ ਵਿੱਚ ਉਲਝੇ ਹੋਏ ਜੀਵਨ ਨੂੰ ਉਂਝ ਤਾਂ ਹਰ ਵੇਲੇ ਸ਼ਾਂਤੀ ਦੀ ਤਲਾਸ਼ ਬਣੀ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ। ਸੰਸਾਰੀ ਮਨੁੱਖ ਬਾਰੰਬਾਰ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਕੁੱਝ ਸਮੇਂ ਲਈ ਸ਼ਾਂਤੀ ਨਾਲ ਜੀ ਲਿਆ ਜਾਵੇ ਇਸਦੇ ਲਈ ਉਹ ਧਰਮ ਦਾ ਕਈ ਤਰ੍ਹਾਂ ਨਾਲ ਸਹਾਰਾ ਲੈਣ ਦੇ ਭਰਮ ਵਿੱਚ ਵੀ ਜਿਉਂਦਾ ਹੈ ਪਰ ਸੱਚੇ ਧਰਮ ਤੋਂ ਕੋਹਾਂ ਦੂਰ ਅਜਿਹੇ ਸੱਜਣ ਨੂੰ ਜਦੋਂ ਤੱਕ ਧਰਮ ਦੀ ਸਮਝ ਹੀ ਨ ਜਾਗੇਗੀ ਤਦੋਂ ਤੱਕ ਸ਼ਾਂਤੀ ਸੰਭਵ ਨਹੀਂ। ਹਨੇਰੇ ਕਮਰੇ ਵਿੱਚ ਗੁਆਚੀ ਹੋਈ ਸੂਈ ਕਦੇ ਕਿਸੇ ਵੱਖਰੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਵਾਲੇ ਥਾਂ ਤੇ ਨਹੀਂ ਮਿਲਦੀ ਬਲਕਿ ਉੱਥੇ ਹੀ ਮਿਲਦੀ ਹੈ ਜਿੱਥੇ ਗੁਆਚੀ ਹੋਵੇ ਬਸ਼ਰਤੇ ਕਿ ਉੱਥੇ ਲੋ ਹੋ ਗਈ ਹੋਵੇ।

ਅਲਖਾਦੇਸ਼ ਪਤ੍ਰਿਕਾ ਭੀ ਇਸੇ ਗੱਲ ਨੂੰ ਪੂਰਾ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਜੀਵਨ ਨੂੰ ਸੱਚੇ ਧਰਮ ਦੇ ਵੱਲ ਨੂੰ ਮੋੜਦੇ ਹੋਏ ਦੇਸ਼ ਵਿਦੇਸ਼ ਦੇ ਅਨੇਕਾਂ ਪ੍ਰਭੂ ਭਗਤਾਂ ਨੂੰ ਲਾਭ ਦੇ ਰਹੀ ਹੈ। ਹੇ ਪ੍ਰੇਮੀ! ਸਥਿਤੀ ਕੋਈ ਵੀ ਹੋਵੇ ਜਾਂ ਭਜਨ ਧਿਆਨ ਚ ਇਕਾਗ੍ਰਤਾ ਨ ਹੁੰਦੀ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਉਸਦੇ ਲਈ ਅਲਖਾਦੇਸ਼ ਮਾਸਿਕ ਪਤ੍ਰਿਕਾ ਪੜ੍ਹ। ਹੋ ਸਕੇ ਤਾਂ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਪੜ੍ਹ ਕੇ ਭੀ ਸੁਣਾ।

**ਆਪ ਜਪੈ ਔਰਾਂ ਨਾਮ ਜਪਾਵੈ, ਨਾਨਕ ਨਿਸ਼ਚੈ ਮੁਕਤੀ ਪਾਵੈ॥**
**ਦਿਵਸ ਮਿਲੈ ਹੈ ਬੀਜਏ, ਰਾਤੀ ਕਾਟਣ ਆਏ।**
**ਦਾਦੂ ਦਿਵਸ ਸੰਭਾਰ ਲੈ, ਰਾਤ ਹਰੀ ਸੰਗ ਜਾਏ॥**

* * * *

# ❖ सत्संग सूचनाएं ❖

**18 अक्तूबर दिन रविवार : प्रवचन :- स्वामी श्री विशेषानंद जी।**

**स्थान :** गांव पदराणा तहसील : गढ़शंकर, जिला : होशियारपुर।

**समय :** प्रात: 11 से 1:30 तक।

**प्रार्थी : श्री देसराज जी ( गीटू राम )**

**25 अक्तूबर दिन रविवार : प्रवचन :- स्वामी श्री विशेषानंद जी।**

**स्थान :** गांव व डाक. बसौली

**समय :** प्रात: 11 से 12:30 तक।

**प्रार्थी : धर्मचन्द जी**

**22 नवंबर दिन रविवार : प्रवचन :- स्वामी श्री विशेषानंद जी।**

**स्थान :** गांव व डाक-नानोवाल, तहसील आनंदपुर साहिब

**समय :** प्रात: 11 से 01 तक।

**प्रार्थी : बिहारी लाल जी,**

**29 नवंबर : अंतिम रविवार : प्रवचन :- स्वामी श्री विशेषानंद जी।**

**स्थान :** गांव व डाक गढ़ मालती, तहसील बिलावर

**समय :** प्रात: 11 से 01 तक।

**प्रार्थी : श्री सतपाल जी**